श्रीमती बिंझाणी महिला महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रायोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

विषय- डॉ. रामविलास शर्मा : जनपक्षधरता की वैचारीकी

डॉ रामविलास शर्मा की जन्मशताब्दी पर देशभर में विभिन्न संगोष्ठियों–चर्चाओं का आयोजन होता रहा एवं हिन्दी की सामाजिक–साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्रिकाओं ने रामविलास शर्मा पर केंद्रित विशेषांक भी निकाले। इसी श्रृंखला की अंतिम कडी में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से मध्य नागपुर के श्रीमती बिंझाणी महिला महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा 10 अक्टूबर 2013 को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी **'डॉ. रामविलास शर्मा : जनपक्षधरता की वैचारिकी'** का आयोजन किया गया। इसी आयोजन में **'जनपक्षधरता की वैचारिकी'** पुस्तक का विमोचन भी किया गया । इसका संपादन बसंत त्रिपाठी एवं नासिर अहमद सिकंदर ने किया हैं। इस पुस्तक में डॉ रामविलास शर्मा के महत्वपूर्ण आलेखों के साथ उनकी विचारधारा और चिंतन के तमाम बिंदुओं पर विश्लेषणपरक लेख शामिल किये गये हैं। पुस्तक का लोकार्पण प्रो शंभुनाथ ने किया।

संगोष्ठी का प्रारंभ कवि निराला के गीत 'वर दे वीणावादिनि' की सांगीतिक प्रस्तुति से हुआ। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रो अजय तिवारी ने किया। प्रो. अजय तिवारी ने अपने उद्घाटकीय वक्तव्य में कहा कि डॉ. रामविलास शर्मा आज के लेखन के प्रतिमान हैं। उनके विचार चिंतन का प्राण तत्व जन है। विकास का नया मॉडल जनता के विकास में सहायक नहीं हैं। बल्कि इस मॉडल ने आर्थिक–सांस्कृतिक–सामाजिक विषमता पैदा की है। उन्होंने आगे कहा कि डॉ. शर्मा जमीन से गहरे जुड़े थे। उन्हें रूपयों का लोभ नहीं था। उनका सिद्धांत और व्यवहार समान था। उन्होंने जनता का मसीहा बनने का प्रयत्न नहीं किया बल्कि जनता के बीच रहते हुए ही वे चाहते थे कि लोग स्वयं अपने जीवन को बदलने का प्रयत्न करें। उस दौर में राज्याश्रय–सेठाश्रय पर लेखकों का जीविकोपार्जन निर्भर था। लेखकीय स्वतंत्रता कुछ लोगों की संपत्ति हो गई थी। किंतु रामविलास शर्मा इससे परे जनता के नजरिये से लेखन कर्म में प्रवृत्त थे। रामविलास शर्मा को 'साम्राज्यवाद का विरोध' विरासत में मिला था। वे केवल आलोचक नहीं थे। उन्होंने कहा कि पारंपरिक भारतीय रूढिवादिता का अंग्रेजों ने बहुत बढ़–चढ़कर प्रचार किया जबकि उन्नीसवीं शताब्दी में भी पाश्चात्य देशों में नस्लीय भेद कट्टरता से माना जाता था। डॉ. रामविलास शर्मा ने इतिहास को तथ्यों के आधार पर दिखाया। उन्होंने इतिहास की तटस्थता को जनता के नजरिए से संदेहास्पद बताया। रामविलास शर्मा की ऐतिहासिक दृष्टि पर उन्होंने कहा कि इतिहास में जिन मुद्दों को नजरअंदाज करने या गलत ढंग से दिखाने की साजिश की गई, रामविलास शर्मा ने उन तमाम मसलों का खुलासा किया।

प्रो. शंभुनाथ ने अपने बीज वक्तव्य में रामविलास शर्मा को केंद्र में रखते हुए नारी और इतिहास के संदर्भ में सार्थक बात की । उन्होंने कहा कि भारतीय समाज में सामंती संस्कार अभी भी गहरे पैठे हुए हैं। डिग्री और शिक्षा भिन्न चीजें हैं। अतः समाज को शिक्षित करना बेहद जरूरी है। इसमें साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि साहित्य में भारत के बँधने की कहानी है। अन्यथा (इतिहास में) कई मसलों को उद्घाटित करने के बदले छुपाया ही गया। प्रो.शंभुनाथ ने कहा कि जनपक्षधरता विकास की वेदी पर तय की गई हैं, क्योंकि भारत में विकास विदेशी पूँजी के बल पर टिका है और जनपक्षधरता राहत कोष, चंद सरकारी योजनाओं तक ही सीमित है। हमारे समय में जनपक्षधरता की वैचारिकी पर यह कुठाराघात है कि यह स्थानीय, जातीय स्तरों पर विभाजित हो गई है। उन्होंने बताया कि रामविलास शर्मा के लिए परंपरा के मूल्यांकन का अर्थ है–अतीत से नई ऊर्जा, प्रेरणा और नया विजन लेकर सामने की ओर देखें । इसीलिये वे परंपरा में जाते है किंतु रूढ़िवादिता को स्वीकार नहीं करते। उनके लिए आधुनिकता से तात्पर्य यांत्रिक भौतिकवाद, राजनीतिक संकीर्णताएँ, उत्तर–औपनिवेशिक इत्यादि कदापि नहीं है। इस तरह डॉ. रामविलास शर्मा की वैचारिकी को समकालीन संदर्भों में महत्वपूर्ण मानते हुए उन्होंने कहा कि डॉ. शर्मा परंपरा और आधुनिकता की समझ को तर्कसम्मत आधार पर रखते हैं, पूर्वग्रह के आधार पर नहीं। डॉ. रामविलास शर्मा ने भारत के इतिहास का संधान 'लोक'– संस्कृति, तर्कशीलता, विवेक के आधार पर किया। वे मानते हैं कि सामाजिक इतिहास को सांस्कृतिक इतिहास से भिन्न नहीं किया जा सकता। अतः इतिहास लेखन लोक केंद्रित होना चाहिये। अपने वक्तव्य के अंत में आलोचना की वर्तमान स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि आज आलोचना इमेज मैनेजमेंट का काम कर रही है। 'पेड क्रिटिसिज्म'का दौर है। मिथ्या आरोप–प्रत्यारोप आदि से आलोचनात्मक विवेक गड़बड़ा रहा है। आलोचना अपनी दिशा से भटक रही है, अतः डॉ. रामविलास शर्मा के चिन्तन को शामिल करने की जरूरत है। नवजागरण काल में तकनीकी सुविधाएँ बहुत कम थीं किंतु विचारधारा उच्च थी, आज स्थिति एकदम उलट गई हैं। संगोष्ठी की प्रस्तावना बसंत त्रिपाठी ने की एवं स्वागत भाषण प्राचार्य स्नेहल पाळधीकर ने दिया। अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री अशोक गॉधी ने इस तरह की संगोष्ठी की आवश्यकता पर बल दिया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र **डॉ. रामविलास शर्मा और हिन्दी आलोचना** पर केंद्रित रहा। प्रथम सत्र में 'समालोचक' के सम्पादकीय – डॉ. शर्मा, रामविलास और निराला, आधुनिक प्रगतिशील साहित्य और डॉ. शर्मा, डॉ. शर्मा की आलोचना में प्रगतिशील मूल्य, भक्ति आंदोलन का मार्क्सवादी मूल्यांकन, नई कविता की आलोचना जैसे विषयों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए गए।

सत्र के प्रमुख वक्ता डॉ. आशीष त्रिपाठी ने कहा कि हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील चेतना 1920–1936 के प्रगति आंदोलन की उपज है। 1920 में भारतीय राजनीति में बुनियादी परिवर्तन शुरू हुए। 1920–30 के दौरान बड़े दलित आंदोलनों की आहटें मिलती हैं। 1935–36 तक औद्योगिक बस्तियों से जुडे काम करनेवाला पुराना कुलीन वर्ग नया

मध्यवर्ग बनकर अस्तित्व में आता है। इस प्रकार यह प्रगतिशील आंदोलन तत्कालीन भारत में हाशिये पर पहुॅचा दिये वर्ग और पहले से हाशिये पर मौजूद और अब बद से बदतर हालातों में ढकेल दिये वर्ग को मुख्य धारा से जोडता है। उन्होंने कहा कि रामविलास शर्मा का वैचारिक चिंतन पहले दौर के प्रगतिशील आंदोलन, अंतिम दौर के स्वतंत्रता संग्राम और 30–40 के दशक के मार्क्सवादी विचार–विमर्श से निर्मित है। इसीलिये उनका समूचा कर्म भारतीय संस्कृति–समाज–परिस्थितियों की व्यापक परियोजना से संबद्ध है। इस क्रम में वे इतिहास, समाजविज्ञान, भाषाविज्ञान, सौंदर्यशास्त्र एवं आलोचना के क्षेत्र में जाते हैं। शर्माजी के समकालीन राहुल सांकृत्यायन, रांगेय राघव, यशपाल और मुक्तिबोध भी इतने ही क्षेत्रों में जाकर अपना काम करने की कोशिश कर रहे थे।

श्री नासिर अहमद सिकंदर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि रामविलास शर्मा आलोचना में जितने बड़े थे, कविता में भी उतने ही बड़े थे। वे प्रगतिशील साहित्य आंदोलन से जुड़ी प्रगतिवादी काव्यधारा के कवि थे जो पूर्ववर्ती छायावादी काव्यधारा से भिन्न भाषा, शिल्प और कथ्य लिये थी। रामविलास शर्मा ने वामपंथ का प्रचार, क्रांतिकारी चेतना और साम्राज्यवाद, पूॅजीवाद व फासिस्ट विरोधी कविताएॅ लिखीं। रामविलास शर्मा की काव्यदृष्टि जनचेतना और जनपक्षधरता जैसे मूल्यों से बनी है। उनकी काव्यदृष्टि में हिन्दी कविता के साथ अंग्रेजी, उर्दू तथा अन्य भारतीय भाषाओं की कविताएॅ भी शामिल थीं। जब तक प्रगतिवादी काव्यधारा को 'मार्क्सवादी ढंग' की आवश्यकता थी, वे कविताएॅ लिखते रहे और जब 'मार्क्सवादी ढंग' पर आक्रमण हुए तो वे गद्य की ओर गये। उन्होंने कहा कि रामविलास शर्मा का लेखन प्रतिवाद का लेखन है और प्रतिवाद वही करता है जो जन सरोकारों के प्रति ईमानदार और प्रतिबद्ध होता कभी–कभी तो लगता है वे जन को केंद्र में रखकर विषय चुनते हैं या दूसरे रूप में वे विषयों को जन–सरोकारों तक ले जाते हैं। रामविलास शर्मा मानते है कि आज का साहित्य जीवन के अधिक अनुरूप हो तो चाहे कला की उपेक्षा भी हो जाये पर मैं लाभ ही लाभ देखता हूॅ। वे अपनी कविता में प्रगतिवादी दृष्टिकोण की हिफाजत करते हैं और आलोचनात्मक लेखों में इसकी जोरदार वकालत करते हैं।

संगोष्ठी का द्वितीय सत्र **डॉ. रामविलास शर्मा के अन्य सरोकार** पर केंद्रित था। द्वितीय सत्र में भाषा और समाज, डॉ. रामविलास की दृष्टि में मार्क्सवाद और प्रगतिवाद, रामविलास शर्मा और हिन्दी जाति, डॉ रामविलास शर्मा की दृष्टि में प्रगतिशील साहित्य, भक्ति आंदोलन और संगीत जैसे विभिन्न पक्षों पर शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। 'डॉ. रामविलास शर्मा के अन्य सरोकार' सत्र के मुख्य वक्ता डॉ. मिथिलेश अवस्थी एवं राकेश मिश्र थे। डॉ. मिथिलेश अवस्थी ने डॉ. रामविलास शर्मा के भाषावैज्ञानिक सरोकारों के संदर्भ में अपनी बात रखते हुए कहा कि भाषाविज्ञान जैसे विषय पर जिम्मेदारी से दखल कर प्रयास को सार्थकता तक पहुॅचाना कोई आसान काम नहीं हैं। रामविलास शर्मा ने भाषा तथा भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन के दौरान पारंपरिक पद्धति का अनुसरण नहीं किया, यही उनके अध्ययन और विश्लेषण की मौलिकता रही। प्रारंभ से ही सामाजिक और वैज्ञानिक

चिंतन के पक्षधर रहने के कारण यह प्रवृत्ति उनके स्वयं के लेखन में स्पष्ट दिखाई देती है। रामविलास शर्मा के भाषावज्ञानिक सरोकारों को मुख्यतः स्थापनाएँ, रचनाएँ और मान्यताएँ इन तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। अंत में उन्होंने कहा कि रामविलास शर्मा द्वारा भाषाविज्ञान के क्षेत्र में किया गया कार्य न केवल भारतीय भाषाओं के वर्तमान स्वरूप को समझने में सहायक है बल्कि भाषा संबंधी शोध कार्य करनेवालों के लिये भी तकनीकी एवं व्यावहारिक दृष्टि से पाथेय सिद्ध हो रहा है।

श्री राकेश मिश्र ने रामविलास शर्मा की इतिहास–दृष्टि पर बात की। उन्होंने कहा कि इतिहास में शासकवर्ग की तानाशाही और वर्चस्व के कारण बाकी की घटनाएँ जनता की व्यापक भागीदारी को अपने में समेटे होने के बावजूद गौण हो जाती है। इसके विरोध में सबाल्टर्न पद्धति का जन्म हुआ। यह नये तरह का इतिहास रचने की चिन्ता रामविलास शर्मा की इतिहास दृष्टि का प्रस्थान बिंदु है। वे इतिहास की गौण घटनाओं को मुख्य प्रक्रिया में लाने की कवायद करते हैं। उन्होंने कहा कि आज के भारत को इतिहास में की गई गलतियों और समझौतों से समझने की कोशिश रामविलास शर्मा को इतिहास लेखन की एक अविछिन्न दृष्टि देती है जिसमें इतिहास कोई श्रम विभाजन में विभक्त घटनाओं का ब्यौरा मात्र नहीं है बल्कि वह सतत चलनेवाली प्रवाहमान प्रक्रिया हैं। मार्क्सवादी होते हुए भी उन्होंने मार्क्स और परवर्ती मार्क्सवादी लेखकों के दुर्योग्य की ओर ध्यान खींचा जिसमें उन्होंने हेगल के लेखन और उसकी विवेचना को आधार बनाया। वे इतिहास लेखन की तमाम प्रचलित प्रवृत्तियों से टकराते दिखते हैं,इस टकराव में वे व्यक्तिगत और विचारधारात्मक दोनों खतरे उठाते हैं। अंत में उन्होंने कहा कि इतिहास लेखन में बिल्कुल नई प्रविधियों को शामिल करने के बावजूद सबाल्टर्न इतिहासकारों के निष्कर्ष अभी तक संदेह के घेरे में है। रामविलास शर्मा को एक सबार्ल्टन इतिहासकार मानने से यह सहूलियत हो जाती है कि उनके निष्कर्षों को हम अभी भी संदेह के घेरे में बहसतलब तौर पर रख सकते हैं। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. अजय तिवारी ने कहा कि डॉ. रामविलास शर्मा हिन्दी जाति का प्रतिनिधित्व करते है। वे सही मायनों में जनता के पक्षधर हैं। मार्क्सवाद डॉ. शर्मा के लिए सिर्फ विचारधारा नही हैं, भारतीय समाज की आवश्यकता है। उन्होंने डॉ. रामविलास शर्मा के व्यक्तित्व के अपरिचित पहलुओं को साझा किया ।

समापन सत्र की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्या स्नेहल पाळधीकर ने किया। प्रतिक्रिया डॉ. सोनू जेसवानी, डॉ. मनोज पाण्डेय एवं नीलम गुप्ता ने व्यक्त की। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. बसंत त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

◎◎◎◎◎

प्रो. शंभुनाथजी एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुये

प्रो. अजय जी तिवारी अपने करकमलों द्वारा दीप जलाकर उद्घाटन करते हुये

मंच पर आसीन सभी महानुभाव

राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक प्रा. डॉ. बसंत त्रिपाठी अतिथी परिचय कराते हुये

डॉ. रामविलास शर्मा: जनपक्षधरता की वैचारीकी इस विषय पर संपादित पुस्तक का विमोचन

प्रो. अजय तिवारीजी अतिथीय वक्तव्य करते समय

प्रो. शंभूनाथ जी उद्घाटन पश्चात सदन को संबोधित करते हुये